Bihar Board Class 7 Sanskrit Notes Chapter 6 संख्याज्ञानम्

संख्याज्ञानम् Summary

[प्रस्तुत पाठ में संस्कृत भाषा में 21 से 50 तक की संख्याओं की अभिव्यक्ति का प्रयोग दिखाया गया है । वाक्य प्रायः प्रकीर्ण हैं। इससे इन संख्याओं के प्रयोग की प्रवृत्ति विद्यार्थियों में उत्पन्न होगी।

अस्मिन् वर्ग पञ्चाशत्.....तेन पारसनाथपर्वतस्य प्रसिद्धिः ।

शब्दार्थ-अस्मिन् – इसमें । पञ्चाशत् = पचास । एकविंशतिः । इक्कीस । नवविंशतिः – उनतीस । उद्याने = बगीचे में । चत्वारिंशत् – चालीस । पाटलपादपाः – गुलाब के पौधे । पञ्चत्रिंशत् – पैंतीस । यथिका – जूही । पञ्चचत्वारिंशत् – पैंतालीस । मल्लिकाः – बेला । त्रिंशत्-तीस । कर्णिकाराः – कनेर । द्वाविंशतिः = बाईस । जपाः – अड़्ह के फूल/वृक्ष । पञ्चविंशतिः – पचीस । शेफालिकाः = हरसिंगार । धारयन्ति – धारण करती हैं। तानि- बहुवचन (नुपं०) ।

प्रातःकाले – सुबह में । भूमी- पृथ्वी पर । विकीर्णानि = बिखरे हुए । सरोवरे = तालाब में। पुष्पाणि – फूल । चतर्विंशतिः चौबीस । विकसितानि – विकसित/खिले हुए । अस्माकम् – हमारे। सम्प्रति – इससमय/आजकल । अष्टाविंशतिः – अट्ठाईस । यत् – कि । पूर्वम् – पहले । त्रयोविंशति = तेईस । तीर्थंकराः (बहुवचन)जैनधर्म के प्रसिद्ध संत । अभवन् – हुए ।

सरलार्थ-इस वर्ग में पचास छात्र हैं । इनमें इक्कीस लड़कियाँ हैं । उनतीस लड़के हैं। विद्यालय के बगीचे में चालीस गुलाब के पौधे, पैंतीस जूहीं के पौधे, पैंतालीस बेला के पौधे, तीस कनेर के पौधे, बाइस अड़हुल फूल के पौधे हैं । जाड़े के समय में उद्यान के पचीस हरसिंगार भी फूल धारण करती है। उनके फूल सुबह में पृथ्वी पर बिखरे हुए होते हैं। तालाब में कमल के फूल हैं । आज चौबीस फूल खिले हैं। हमारे देश में अभी अठठाइस राज्य हैं । आकाश में सताइस नक्षत्र हैं । जैनी लोग कहते हैं कि महावीर वर्धमान से पहले 23 तीर्थकर हुए हैं। पार्श्वनाथ तेइसवा तीर्थकार हुए । उनके द्वारा पारसनाथ पर्वत प्रसिद्ध है।

अस्माकं मुखे द्वात्रिंशत् दन्ताः ..... तव ग्रामे द्वाचत्वारिंशत्
कूपाः

सन्ति । शब्दार्थ-द्वात्रिंशत् = बत्तीस । दन्ताः = दाँत । सप्तविंशतिः । सत्ताईस । एकस्मिन् मासे – एक महीने में । दिवसाः – दिन । एकत्रिंशत् – इकतीस । चतुर्थे वर्षे – चौथे साल में । ऊनत्रिंश् = उनतीस । अष्टचत्वारिंशत् – अड़तालीस । लेखनपुस्तिकायाम् = कॉपी में । चत्वारिंशत् – चालीस । पत्राणि – पन्ने । मम – मेरे । षट्चत्वारिंशत् – छियालीस । एव – ही। त्रयस्विशत्-तैंतीस । गृहाणि – घर (बहुवचन) । तव- तुम्हारे । द्वाचत्वारिंशत् – बयालीस । कूपाः कुएँ।

सरलार्थ-हमारे मुँह में बत्तीस दाँत हैं । एक महीने में सामान्यतः तीस दिन होते हैं । किन्तु जनवरी, मार्च, मई, जुलाई, अगस्त, अक्टूबर और दिसम्बर में इक्तीस दिन होते हैं । फरवरी महीने में अट्ठाइस दिन होते हैं किन्तु चौथे वर्ष में उनतीस दिन होते हैं । मेरी कॉपी में चालीस पन्ने हैं। इस पुस्तक में अड़तालीस पृष्ठ हैं । मेरी गणित की किताब में छियालीस पन्ने हैं। मेरे गाँव में तैंतीस घर हैं । तुम्हारे गाँव में बयालीस कुएँ हैं ।

https://www.evidyarthi.in/

प्रकृति-प्रत्यय-विभाग:

अभवन् = √भू , लङ् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन
कथयन्ति = √कथ, लट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन
भवन्ति = √भू, लट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन
धारयन्ति = √धृ, लट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन
सन्ति = √अस् , लट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन

evidyarthi

https://www.evidyarthi.in/